

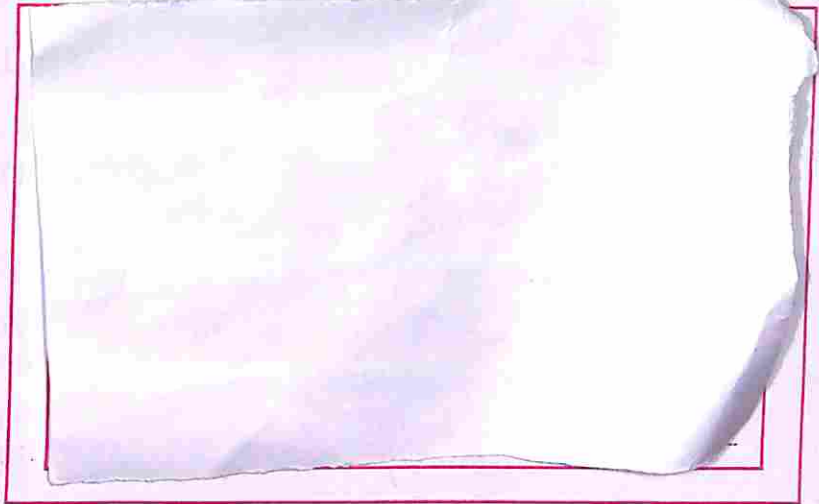


माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा



(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिए)



प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	18	19	4
2	6	20	4
3	12	21	
4	2	22	
5	2	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	3	योग	80
15	3	प्राप्तांकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	3		Eighty.
18	4	80	

क के हस्ताक्षर

[Signature]

क 3 2 3 4 4

नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम - हिन्दी ☒ अंग्रेजी ☐

विषय इतिहास।

परीक्षा का दिन बुधवार।

दिनांक 4/3/2026

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

ले किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 181/2026

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न-पत्र पर निर्धारित स्थान पर ही अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न-पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:-
 - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
 - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिए। परीक्षार्थी उत्तर पुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
 - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केल्व्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
 - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबल के आस-पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।
 - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - (अ)

1.

प्र. सं.	(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)
उत्तर	(द)	(ब)	(क)	(द)	(स)	(स)	(ब)	(ब)	(द)

(18)

(x)	(xi)	(xii)	(xiii)	(xiv)	(xv)	(xvi)	(xvii)	(xviii)
(स)	(स)	(द)	(अ)	(स)	(द)	(ब)	(स)	(स)

1 2(i) 700 ✓

1 (ii) महाभारत । ✓

1 (iii) कितान - उल - हिन्द । ✓

1 (iv) कॉलिन मैकैन्जी । ✓

1 (v) जमींदार । ✓

1 (vi) अवध । ✓

(6) 3(i) चाणक्य 'चंद्रगुप्त मौर्य' के मंत्री थे ।

1 (ii) पाटलिपुत्र को वर्तमान में 'पटना' कहा जाता है ।

1 (iii) 'बहुपत्नी प्रथा' एक स्त्री व पुरुष की एक से अधिक पत्नियाँ होने की प्रथा थी ।

1 (iv) 'अशोक' ने आजीविक समप्रदाय के लिए सबसे प्राचीन



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		मुफाएँ बनवायीं थीं।
↓	(v)	फ्रांस का यात्री 'फ्रांस्वा बर्नियर' ने दारा शिकोह के चिकित्सक के रूप में काम किया।
↓	(vi)	शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह 'अजमेर' में स्थित है।
↓	(vii)	'1336 ई.' में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई।
↓	(viii)	अकबर के दरबारी इतिहासकार 'अबुल फजल' ने आइन-ए-अकबरी पुस्तक लिखी।
↓	(ix)	पहाड़िया लोग कुदाल की सहायता से अपने जीवनयापन हेतु 'झूम' कृषि करते थे।
↓	(x)	यह कथन 'अवध' विद्रोह के बारे में है।
↓	(xi)	लाल → लाल बहादुर शास्त्री। (पंजाब से) बाल → बाल गंगाधर तिलक। (महाराष्ट्र से) पाल → बिपिन चंद्र पाल। (बंगाल से)
↓	(xii)	'डॉ. राजेन्द्र प्रसाद' संविधान सभा के अध्यक्ष थे।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

2005- (ब)

4.

सिंधु घाटी सभ्यता में वाट:-

(i) सिंधु सभ्यता में वाट चर्ट नामक पत्थर से बनाये जाते थे। ये किसी भी प्रकार के निशान से रहित घनाकार होते थे।

(ii) इन वाटों का प्रयोग सामान्यतः मनकों अथवा आभूषणों को तोलने के लिए किया जाता था। इनका निचला मानदण्ड प्लिआथरी था व ऊपरी मानदण्ड दशमलव प्रणाली का अनुसरण करता था।

5.

मगध महाजनपद के साकृतिक संसाधन:-

(i) हाथी व खनिज:- मगध महाजनपद के जंगलों में प्रचुर मात्रा में हाथी उपलब्ध थे, जो सेना के एक आवश्यक अंग थे। साथ ही लौह खनिज भी उपलब्ध था, जिससे औजार व हथियार बनाये जाते थे।

(ii) गंगा नदी:- मगध महाजनपद की राजधानी पाटलिपुत्र गंगा नदी के आवागमन के मार्ग पर स्थित था। इससे जल-संसाधन की पूर्ति होती थी।

6.

अक्षत्रिथ राजा:-

(i) सातवाहन:- सातवाहन वंश के शासक क्षत्रिथ न होकर ब्राह्मण थे। प्रसिद्ध सातवाहन शासक 'शौतमी-पुत्र-शातकर्णी' ने स्वयं को क्षत्रिथों के दर्प का हनन करने वाला बताया था।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(2)

- (ii) शुंग व कण्व मौर्यों के बाद शासन करने वाले शुंग व कण्व शासक भी ब्राह्मण ही थे।

7.

स्तूप की संरचना:-

- (i) अण्ड:- यह स्तूप का आधार तथा मुख्य भाग होता था। यह मिट्टी के अर्धगोलाकार छतरे के आकार की एक संरचना थी, जिसमें बौद्धिकत्वों के अवशेष गाड़े जाते थे। ये प्रारम्भ में बिना भूलंकरण के होते थे।

(2)

- (ii) हर्मिका:- अण्ड के ऊपर एक छज्जे जैसी संरचना होती थी, जिसे हर्मिका कहते थे, यह देवताओं के घर का प्रतीक था।

BSER-181/2026

8.

भारतीय डाक-प्रणाली:-

- (i) इब्न बतूता ने बताया है कि भारत की डाक-प्रणाली से न केवल व्यापारियों के लिए उधार भेजना, बल्कि अल्प सूचना पर माल भेजना भी संभव हो जाता था।

- (ii) जहाँ सुल्तान से दिल्ली की यात्रा में 40 तथा सिंध से दिल्ली की यात्रा में 50 दिन लगते थे, वहीं सुल्तान की खबरें गुप्तचरों के द्वारा मात्र 5 दिनों में ही पहुँचा दी जाती थी। अतः यह प्रणाली अत्यन्त कुशल थी। डाक प्रणाली की प्रकार की थी-

- (i) उलुक (अश्व डाक व्यवस्था) (ii) दावा (पैदल डाक व्यवस्था)।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

9.

विजयनगर साम्राज्य की जल-संपदा-

(i) हौज बनाना:- तुंगभद्रा नदी विजयनगर साम्राज्य में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदी थी। इस नदी की जलधाराओं से अनेक हौज बनवाये गये। 'कमलपुरम जलाशय' एक ऐसा ही हौज था जो सिंचाई के साथ ही राजकीय केंद्र तक भी जल पहुँचाता था।

(ii) हिरिया नहर:- हिरिया नहर विजयनगर साम्राज्य की सबसे विशिष्ट जल संपदा थी। इसमें तुंगभद्रा नदी के द्वारा जल लाया जाता था। यह धार्मिक केंद्र व शाही केंद्र को अलग करने वाली घाटी को सिंचित करती थी।

10.

सूर्यास्त-विधी कानून-

(i) बंगाल में चार्ल्स कार्नवालिस द्वारा इस्तमशरी बंदोबस्त 1793 में लागू किया गया।

(ii) सूर्यास्त-विधी कानून के अनुसार प्रत्येक जमींदार को निश्चित जमींदारियाँ आवंटित की जाती थीं। इन जमींदारियों में कई गाँव होते थे। जमींदार को अपनी जमींदारी से निश्चित कर वसूल कर कंपनी को देना होता था। यदि ऐसा निश्चित तिथि तक सूर्यास्त तक कर जमा नहीं किया गया तो उस जमींदार की जमींदारी नीलाम कर दी जाती थी। यह कानून ही 'सूर्यास्त-विधी-कानून' कहलाता था।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

11.

1857 के विद्रोह के दौरान फैली अफवाह:-

(i) सिपाहियों में यह अफवाह फैली हुयी थी कि उनके द्वारा प्रयोग की जाने वाली 'एम्फील्ड-राइफल' में गाय और भूअर की चर्बी लगी कारतूसों का प्रयोग किया गया था, जिसे मुंह से काटना होता था। इससे हिंदुओं और मुसलमानों का धर्म भ्रष्ट हो सकता था।

(ii) भाय ही आटे में ~~स~~ हड्डियों का घुसा मिला होने की अफवाह भी प्रचलित थी, जिससे सैनिक भड़क उठे।

BSER-18/2026

12.

कांड़ी याता:-

(i) कांड़ी याता महात्मा गाँधी ने अपने आश्रम साबरमती (गुजरात) से शुरू की थी।

(ii) उन्होंने यह याता अपने अनुयायियों के साथ 12 मार्च, 1930 को शुरू की थी।

उन्होंने कांड़ी में नमक बनाकर नमक कर को तोड़ा था।

13.

राज्य- सरकार के लिए आश्रित कर:-

(i) संविधान सभा में राज्य- सरकार के लिए आश्रित करों में जमीन व भू-सम्पत्ति कर, वीतल बंद शराब पर लगाने वाला कर व बिक्री कर शामिल किए गये थे।

(ii) इसके अतिरिक्त राज्य सरकार को अपनी इच्छा से अन्य सामान्य कर वसूलने का अधिकार विधायता

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(2) साथ ही समवर्ती सूची में आथ कर व आवकारी कर पर राज्य व केन्द्र सरकारें दोनों को अधिकार दिया गया।

खण्ड - (स)

14. बौद्ध मूर्तिकला में प्रतीकों का महत्व:-
बौद्ध धर्म के इतिहास को जानने के लिए प्रतीकों का विशेष महत्व है। इसकी शुरुआत हीनयान परंपरा से हुई थी। हीनयान परंपरा में बुद्ध की अवसना आदमकद मूर्तियाँ अथवा मनुष्य के रूप में न करके प्रतीकों के रूप में की गई हैं। इनमें स्तूप, चक्र, शिवस्थान, वृक्ष आदि प्रतीक आते हैं तथा यही कसौटी इन्हें महायानी से पृथक् करती है। इन प्रतीकों के द्वारा निम्न तत्व दर्शाये गये हैं:-

(i) स्तूप:- स्तूप को बुद्ध की निर्वाण प्राप्ति अथवा महापरि-
निर्वाण का प्रतीक माना जाता है। बुद्ध की निर्वाण की प्राप्ति 'कुशीनगर' में हुई थी। साँची, भरहुत आदि स्थानों पर भी स्तूप बनाये गये हैं।

(ii) चक्र:- चक्र का अर्थ है बुद्ध का प्रथम उपदेश, जो उन्होंने शारनाथ में दिया था। बौद्धाग्रा में ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् यह इस बात का प्रतीक है कि यहीं से बुद्ध बौद्ध धर्म के ज्ञान का चक्र घुमा। यह भी एक पूजनीय प्रतीक है।

(iii) वृक्ष:- वृक्ष बुद्ध के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना का प्रतीक है। वृक्ष, जो कि अपने आरंभिक स्वरूप में एक ब बीज था, बाद-पानी पाकर विशालता की प्राप्ति हुआ,

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उसी प्रकार बुद्ध भी अपने जीवन में ज्ञान पाकर समझता को प्राप्त हुए।

(iv) शिव-स्थान:- यह बुद्ध के ध्यान की दशा का प्रतीक है, क्योंकि ध्यान में अंतरात्मा, परमात्मा में एकाकार हो जाती है।

(3) इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लिखित साक्ष्यों के समानान्तर बौद्ध प्रतीकों में भी इतिहास को समझने में सहायता की है।

BSR-181/2026

15. मुगल काल की फसलें:-

मुगल काल के दौरान भारत की कृषि की स्थिति काफी अच्छी थी। इस काल में मुख्यतः मौसम के दो चक्रों के दौरान खेती की जाती थी-

(i) रबी:- रबी की फसलें मुख्यतः पतझड़ के काल में बोई जाती थीं, जैसे- गेहूँ।

(ii) खरीफ:- खरीफ की फसलें वसंत के समय में बोई जाती थीं, जैसे- चावल।

अधिकतर इतिहासकारों का मानना है कि मुगल काल में खेती का प्राथमिक उद्देश्य केवल पैट भरना था। अतः तीन मुख्य फसलों की कृषि होती थी-

(i) गेहूँ (ii) ज्वार (iii) चावल।

अच्छी उत्पादकता:- मुगल काल में जहाँ पर जल की पर्याप्त उपलब्धि रहती थी, वहाँ पर साल में तीन फसलें उगायी जा सकती थी, अन्यथा सामान्य

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

जलापूर्ति वाले क्षेत्रों में भी वर्ष में कम से कम दो फसलें होती थी। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में चावल तथा कम वर्षा वाले क्षेत्रों में ज्वार या गेहूं ही बोया जाता था।

फसलों की किस्में:- बंगाल में चावल की 50 किस्में, दिल्ली में 43 तथा आराध में 39 किस्म की फसलें बोयी जाती थीं। बंगाल अपनी चीनी के लिए मशहूर था।

जिन्स-ए-कामिल:- कुछ फसलें व्यापारिक महत्व की होती थीं, राज्य अपने राजस्व को बढ़ाने के लिए इन फसलों की प्रोत्साहन देता था। जैसे- कपास, गन्ना।
नयी फसलें:- इसके अतिरिक्त कुछ फसलें नयी पुनिया (अमेरिका) से आयीं। जैसे- आलू, टमाटर, मिर्च, पपीता, अनानास। तथा मक्का अफ्रीका से लाया गया।

16. असहयोग आंदोलन शांति की दृष्टि से नकारात्मक किन्तु प्रभाव की दृष्टि से सकारात्मक:-
उपर्युक्त कथन गांधीजी के अमेरिकी जीवनी लेखक लुई-फिशर ने कहा था। असहयोग आंदोलन 1919-20 में चलाया गया था।

शांति के आधार पर नकारात्मकता:-

- (i) सरकारी संस्थानों का बहिष्कार- विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार कर दिया। अदालतों ने पदना छोड़ दिया।
(ii) न्यायालय का बहिष्कार- वकीलों ने न्यायालयों में मुकदमा लड़ने से मना कर दिया तथा न्यायालयों का बहिष्कार किया।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(iii) विशेष प्रदर्शन - महिलाओं ने विशेष प्रदर्शन करते हुए शराब की दुकानों पर धरना दिया, स्वयं की गिरफ्तारी के लिए पेश किया। तथा विदेशी कपड़ों की हौली जलाकर स्वदेशी का प्रचार किया।

(iv) मजदूर, किसानों का प्रदर्शन आंदोलन के दौरान फैक्ट्री कामगारों ने हड़ताल कर दी। 1921 में कुल 396 हड़तालें हुईं, जिनमें 6 लाख श्रमिक शामिल थे। अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाया। उत्तरी आंध्र के लोगों ने पहाड़िया कानूनों का उल्लंघन किया तथा कुमाऊँ के लोगों ने अंग्रेजों का सामान उठाने से मना कर दिया।

• प्रभाव के आधार पर सकारात्मकता -

(i) इस आंदोलन में महिलाओं ने भी भाग लिया, जिनमें कमलादेवी चट्टोपाध्याय प्रमुख थीं।

(ii) यह पूर्णतः अहिंसक आंदोलन था।

(iii) इस आंदोलन ने गांधीजी की सम्पूर्ण विश्व में लोक प्रिय बना दिया।

(iv) इस आंदोलन से अंग्रेजों की यह आशासक हो गया कि उनका राज अधिक दिनों तक नहीं चलेगा। परिणामस्वरूप अंग्रेजी राज की जीव हिल गयी।

(v) इस आंदोलन से भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन का आधार स्थ मजबूत हुआ था जनसमर्थन एकजुट हुआ।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

17. संविधान सभा में आदिवासियों हेतु चर्चाएँ संविधान सभा में इस संबंध में निम्न वथान दिए गए-

(i) जयपाल सिंह:-

संविधान सभा में आदिवासियों के अधिकारों हेतु आवाज़ उठाने वाली में जयपाल सिंह प्रमुख थे। उन्होंने कहा "यदि इस देश में किसी समूह के साथ सही व्यवहार नहीं किया गया है तो वह मैरा समूह है। हमें 6000 सालों तक दबाया गया है तथा हमारी आवश्यकताओं की अनदेखना की गयी है। इसलिए हमारे समुदाय की संरक्षण की आवश्यकता है।" उन्होंने सरकारी संस्थाओं में संरक्षण की माँग की।

कै. जे. थाडेलकर:-

(ii) थाडेलकर जी ने वथान दिया कि "हमें दबाया गया ... दबाया गया ... हजारों सालों तक इस प्रकार दबाया गया की अब हमारे मस्तिष्क, हमारी देह काम नहीं करती और हमारा हृदय आवश्यक हो गया है।"

जे. नागाप्पा:-

(iii) जे. नागाप्पा ने वथान दिया कि "आदिवासी संस्था की दृष्टि से अल्पसंख्यक नहीं हैं। आकृति में उनका हिस्सा 20-25 प्रतिशत है, परन्तु उन्हें संरक्षण की आवश्यकता है, तथा उन्हें शिक्षा से वंचित रखा गया है। परन्तु अब उन्हें अपने अधिकार ज्ञात हो गये हैं।"

आर्थिक - स्तर पर:-

(iv)

इसके अतिरिक्त आदिवासियों का

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

प्रत्यक्ष रूप से नाम न लेकर रेगा ने गरीब लोगों के हित में कहा कि "यहाँ संविधानसम्मत अधिकारों की प्रभावी रूप से लागू करने की अधिक आवश्यकता है, जिससे उन्हें नागरिक अधिकार दिए जा सकें।"

इस प्रकार, विभिन्न पक्षों ने अलग-अलग स्तर पर आदिवासियों की सुरक्षा पर चर्चा की तथा संविधान सभा ने भी इन समस्याओं की ध्यान में रखकर प्रभावी नियम लागू किए।

खण्ड - (द)

18

सिंधु सभ्यता का नगर-नियोजन:-

सिंधु सभ्यता के नगर-नियोजन से उन लोगों की उच्च जीवन-शैली तथा वृद्धिमत्ता के संकेत मिलते हैं, क्योंकि नियोजन, जल-निकासी, गृह स्थापत्य आदि को सावधानीपूर्वक निर्मित किया गया था। इसकी व्याख्या निम्नानुसार है -

11) वस्ती का विभाजन:- सिंधु सभ्यता में संपूर्ण वस्ती को दो भागों में बाँटा गया था - (i) दुर्ग (ii) निचला शहर। दुर्ग ऊपर बनी, पश्चिम की विशाल दीवारों से घेरी तथा निचला शहर पूर्व में बनी विस्तृत क्षेत्र पर फैली थी। संपूर्ण वस्ती के नियोजन के अनुसार उसका क्रियान्वन किया गया था, अर्थात् कुशल अभियन्ताओं ने इसकी योजना बनायी थी।

(ii) निचले शहर का निर्माण

निचले शहर की कुछ संरचनाएँ कच्ची मिट्टी की ईंटों के चबूतरों पर बनायीं गयीं थीं जो कि जीव का कार्य करते थे। इन चबूतरों की बनाने में भारी मात्रा में भूमि की आवश्यकता पड़ी होगी। एक अनुमान के अनुसार यदि एक भूमि एक घमीय मीटर मिट्टी प्रतिदिन ढोता होगा तो अकेले आधारों की बनाने में ही 40 लाख भूमि दिवस लगे होंगे। अर्थात् वे लोग भूमि संग्रहण में निपुण थे।

(iii) जल निकासी

सिंधु सभ्यता में जल निकासी की उचित व्यवस्था थी। पहले नालियों के साथ गलियों की बनाया गया था और उसके अगल-बगल आवासीय का निर्माण किया गया था। नालियाँ पक्की ईंटों से बनी होती थीं और चूने की पहिरका से ढकी होती थी। घर का गन्दा पानी पहले हीज में जाता था तथा ठोस मल के एकत्रण के बाद गन्दा जल गली की नालियों में वह जाता था। नालियों पर सफाई के लिए भी जगह-जगह पर हीद बने होते थे। इस प्रकार सिंधु सभ्यता निवासी जल की व्यवस्था के प्रति भी सचेत थे।

(iv) स्वास्थ्य की समानता

हडप्पा स्थल के मकान कुछ पक्की व कुछ कच्ची ईंटों के बने थे। ये ईंटें धूप में सुखाकर अथवा भट्टी में पकाकर बनायी जाती थीं यद्यपि ईंटों का उत्पादन किसी निश्चित स्थान पर नहीं होता था परन्तु

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

गुजरात से लेकर जम्मू तक सभी इतने समान अनुपात की थीं। इनकी लम्बाई, चौड़ाई व ऊँचाई का अनुपात क्रमशः 4:2:1 होता था। इससे स्पष्ट है कि सिंधु सभ्यता वासी भूमि के संगठन के साथ-साथ निर्माण सामग्री के चयन, निर्माण, माप में भी निपुण थे।

(v) मह स्थापत्य:-

दुर्ग में आवासीय भवनों की कोई योजना नहीं मिलती परन्तु निचले शहर का मह स्थापत्य अद्भुत था-

(i) घर आँगन - केन्द्रित होते थे, तथा चारों ओर कमरे बने होते थे। आँगन का प्रयोग सामान्यतः कटाई, धुलाई आदि गतिविधियों में होता था।

(ii) मुख्य द्वार से आँगन का सीधा अवलोकन नहीं होता था। गोपनीयता की दृष्टि से निचले तल पर बने आवासों में छिड़कियाँ नहीं थी।

(iii) प्रत्येक घर का ईंटों से बना समानघर होता था। जिसकी एक दीवार गली की नाली से जुड़ी होती थी।

(iv) दूसरी मंजिल या छत तक जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी थीं। बाहर की ओर बने कमरे, में शहमीयों के प्रयोग के लिए कमरा कुँआ था।

निष्कर्ष:- सिंधु घाटी सभ्यता के नगर नियोजन के निम्न तत्वों से ज्ञात होता है कि वे लोग वस्ती के

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

विभाजन से लेकर जल निकासी तक सभी की व्यवस्था अपनी जलवायु, क्षमता, जीवन-शैली के आधार पर करते थे।

19. सूफी तथा राज्य के मध्य संबंध-

इस्लाम के उद्भव के पश्चात् कुछ लोगों का आध्यात्म तथा वैश्व वाद की ओर झुकाव बढ़ा, जिन्हें सूफी कहा गया। ये सूफी संत सात्विक जीवन-शैली अपनाते थे। इनके राज्य के साथ कौमल तथा कठोर दोनों संबंध थे, जिनकी व्याख्या निम्नानुसार है:-

(i) सूफियों का समर्पण-

सूफी संतों की धर्मनिष्ठा, विद्वता तथा लोगों द्वारा उनकी चमत्कारी शक्ति में विश्वास उनकी लोकप्रियता का मुख्य कारण था। अपनी प्रजा का समर्पण प्राप्त करने के लिए उन्होंने सूफी संतों से घनिष्ठ संबंध बनाये। तेरहवीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही शासकों ने 'उल्मा' द्वारा शरिया लागू किए जाने की मान्यता को अस्वीकार कर दिया। क्योंकि, वे जानते थे कि उनकी अधिकांश प्रजा इस्लाम धर्म को मानने वाली नहीं थी।

(ii) राज्य से भेंट-

सूफी संत अधिकतर राज्य से दूर ही रहते थे। परन्तु यदि राज्य बिना मौतों उन्हें कोई भेंट देता था, तो वे उसे स्वीकार भी कर लेते थे।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

सूफी सन्त राज्य से प्राप्त किसी भी अनुदान को संरक्षित नहीं करते थे, बल्कि उसे अपने अनुयायियों या खानकाह के लिए भोजन, वस्त्र आदि पर खर्च कर देते थे। राज्य सूफियों को कुछ भूमि भी अनुदान में देता था।

(iii) संबंधों में तनाव

कभी-कभी राज्य तथा सूफियों के मध्य तनावपूर्ण संबंध भी होते थे, क्योंकि सूफी राज्य की भेंट को अस्वीकार कर देते थे। सूफी के कुछ मानदण्ड थे, जैसे - झुककर प्रणाम करना व पदवियों की जाती थीं, जैसे शीख निज़ामुद्दीन औलिया के अनुयायी उन्हें "सुल्तान-उल-मशौख" कहकर संबोधित करते थे।

(iv) सुल्तानों के योगदान

- ↳ ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर पहली बार यात्रा करने वाला सुल्तान मुहम्मद-बिन-तुगलक था।
- ↳ शीख की मजार पर पहली इमारत मालवा के सुल्तान गियासुद्दीन खिलजी ने पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बनवाई थी।
- ↳ अकबर ने ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह की 14 बार यात्रा की थी। तथा 1568 ई. में एक देगा भी दरगाह की भेंटस्वरूप दी थी।
- ↳ अकबर ने चिश्ती सन्त की दरगाह की यात्रा

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

करता रहता था। कभी पुतों के जन्म पर था किसी नई जीत का जश्न मनाने। उसने यह परंपरा 1580 ई. तक बनाये रखी।

(v) शासकों की दरगाहें सूफी सन्तों के पास बनवाना:- मुगल शासक अधिकतर अपनी दरगाहें सूफी सन्तों की दरगाहों के करीब बनवाते थे। क्योंकि इन सन्तों की दरगाह पर आध्यात्मिक आशीर्वाद, वरकत के लिए लोग आते रहते थे।

(vi) अमीर-खुसरौ का संबंध:-

राज्य के दरबार के मुख्य व्यक्ति भी सन्तों के शिष्य थे। जैसे- अमीर खुसरौ व जियासुद्दीन बरनी। अमीर खुसरौ, जो शैख जिलामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। ने 'कौल' का प्रचलन किया।

निरुक्ति:- इस विवरण से ज्ञात होता है कि राज्य तथा सूफी दोनों अपनी मर्यादा में रहकर एक-दूसरे से संबंध रखते थे तथा सहयोग करते थे।

P.T.O.



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

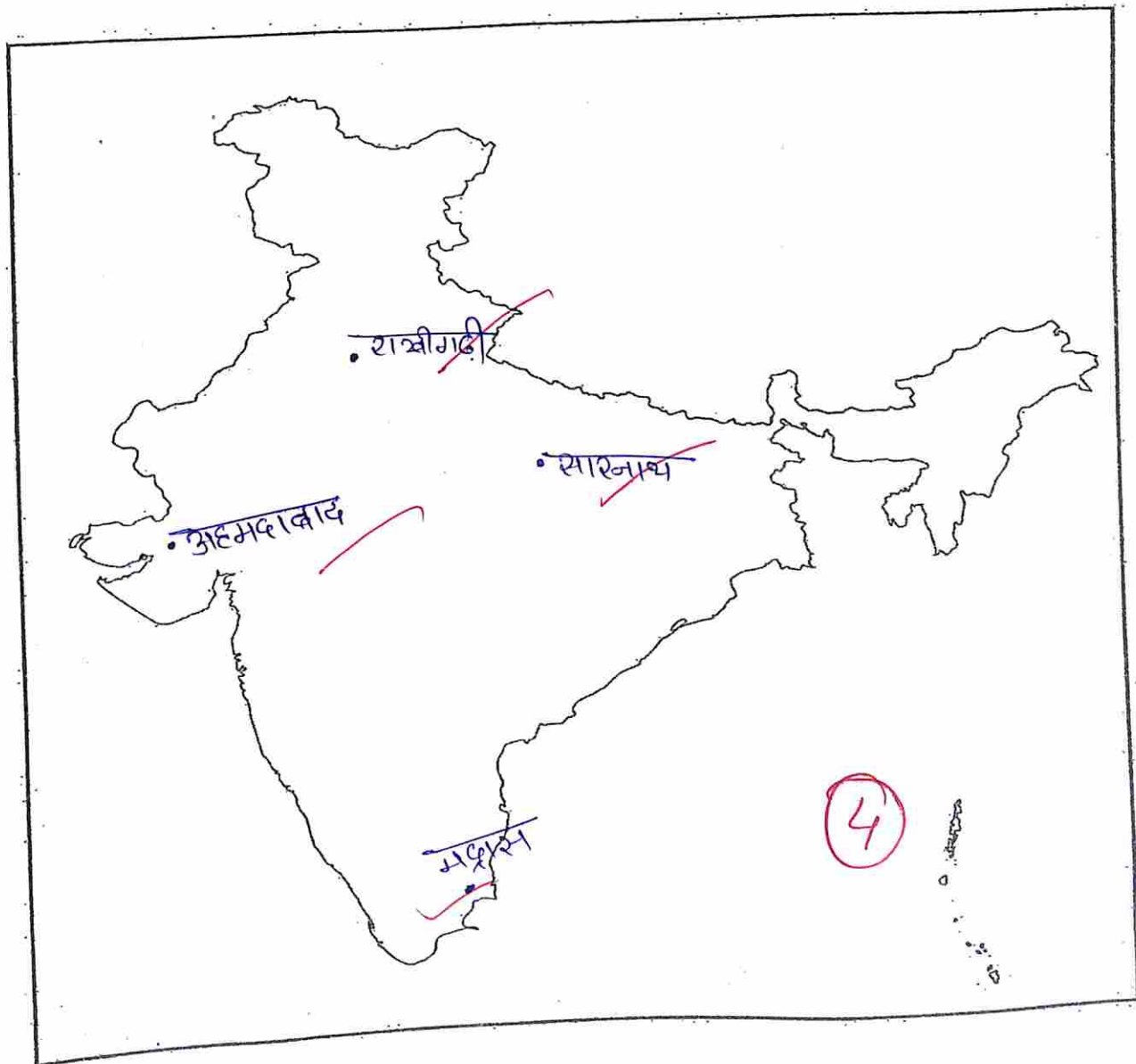
परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18/1/2026

SS-13-Hist.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2026
SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2026

इतिहास
HISTORY



SS-13-Hist.



परीक्षक द्वारा
प्रश्न संख्या

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18/2026

SS-13-Hist.

DO NOT WRITE

परीक्षार्थी उत्तर

E ANYTHING



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

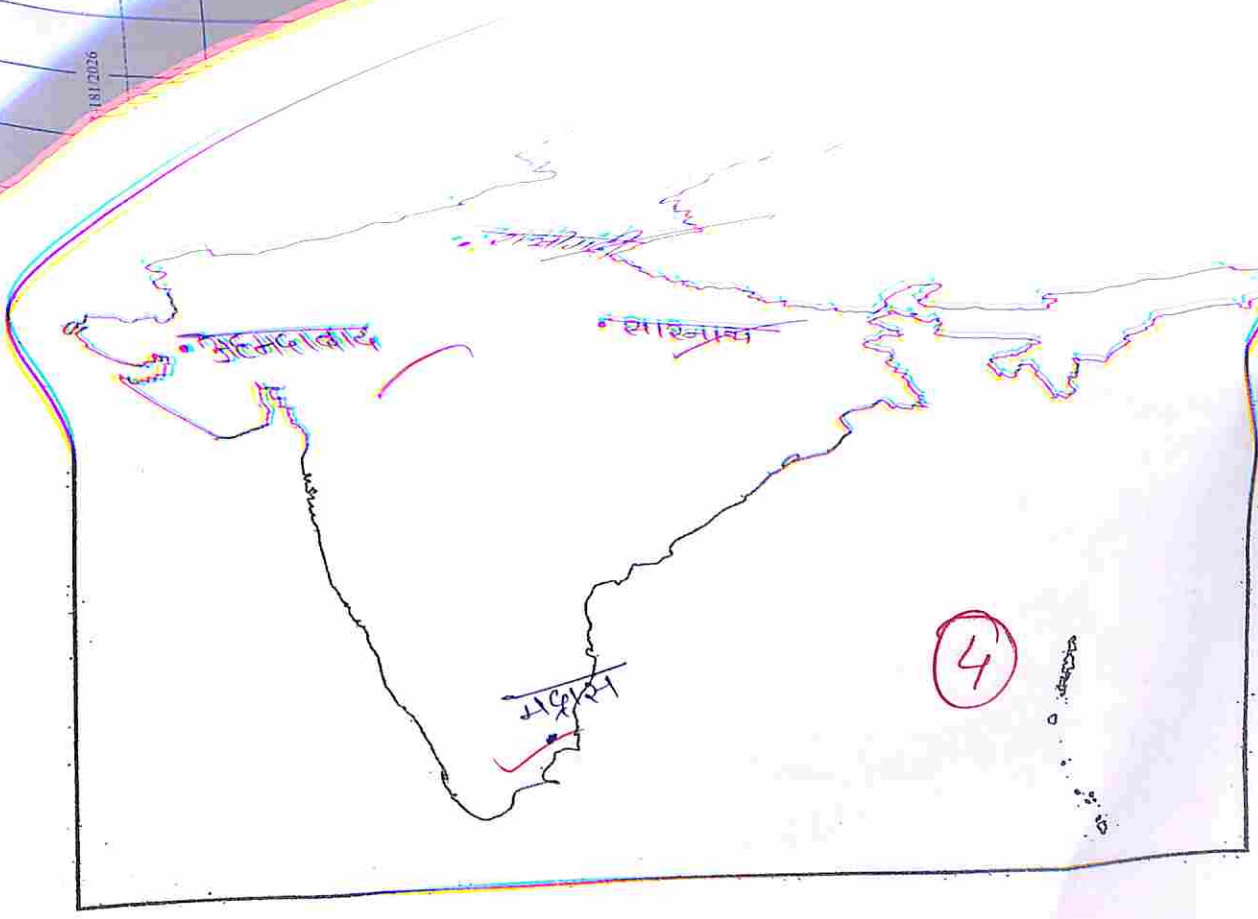
BSER-18/2026

अह

परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या





परीक्षाधीन उत्तर

परीक्षाधीन उत्तर
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

BSER-18/2026

S'



परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

BSER-18/2026

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

HSER-181/2026



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18/12/2026



परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या
-------------------------------	------------------

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSEP-18/2026

